कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MHD–21

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)
(एम. एच. डी.)
सत्रांत परीक्षा
दिसम्बर, 2024
एम.एच.डी.–21 : मीरा का विशेष अध्ययन

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

***नोट : प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) अँखियाँ कृष्ण मिलन की प्यासी।
आप तो जाय द्वारका छाये, लोक करत मेरी हौंसी॥
आम की डार कोयलिया बोलै, बोलत सबद उदासी॥
मेरे तो मन ऐसी आवै, करवत लेहौं कासी॥
मीरा के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल की दासी॥

(ख) यो तो पलक उघाडो दीनानाथ, मैं हाजिर कद की खड़ी।
सजनिया दुसमन होय बैठ्या, सब नैं लगे कड़ी।

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

तुम बिन साजन कोई नहीं है, डिगी नाव मेरी समंद अड़ी॥
दिन नहिं चैन नहिं निंदरा, सूकूँ खड़ी-खड़ी।
बान बिरह का लग्या हिये में, भूलूँ न एक घड़ी॥
पत्थर की तो अहिल्या तारी, बनके बीच पड़ी।
कहा बोझ मीरां में कहिये, सौ पर एक घड़ी॥

(ग) वै न मिले जिनकी हम दासी।
पात-पात वृन्दावन ढूँढ़यौ ढूँढि फिरी सगरी मैं कासी॥
कासी कौ लोग बड़ो विसवासी मुख मैं राम बगल में फाँसी॥
आधी कासी मैं बाँमण बणियाँ आधी कासी बसे संन्यासी॥
मीरा के प्रभु हरि अबिनासी हरिचरणां की रहौं मैं दासी॥

(घ) आली मोहि लागत वृन्दावन नीको।
घर-घर तुलसी ठाकुर पूजा, दर्शन गोविंदजी को॥
निर्मल नीर बहत यमुना को, भोजन दूध-दही को॥
रत्न-सिंहासन आप बिराजे, मुकुट धर्‌यो तुलसी को॥
कुंजन-कुंजन फिरत राधिके, शब्द सुनत मुरली को॥
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भजन बिना नर फीको॥

2. "कृष्ण भक्ति मीराँ के लिए साधन थी न कि साध्य।" प्रस्तुत कथन के आलोक में मीराँ की भक्ति के बारे में अपना मत व्यक्त कीजिए। 10

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

3. मीराँ के काव्य से स्त्री के प्रश्न को किस रूप में समझा जा सकता है ? स्पष्ट कीजिए। 10

4. कृष्ण भक्ति काव्य परंपरा में मीराँ की प्रेम-भावना के वैशिष्ट्य को समझाइए। 10

5. मीराँ की काव्यकला में 'पद-रचना' के महत्व को स्पष्ट कीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×5=10

   (क) आंदाल

   (ख) सहजोबाई

   (ग) मीराँबाई की काव्य-भाषा

   (घ) रामानुजाचार्य

× × × × × × ×

Downloaded from www.IGNOUBABA.com